पाठ-1

कलीसिया का जन्म

I. यीशु ने जो मिशन दिया- प्रेरितों 1:11.

1. यीशु प्रेरितों के साथ- प्रेरितों 1:1-3. वह उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बताता है और यह समझाता है कि वे राज्य में कैसे रहेंगे।
2. पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा- प्रेरितों 1:4-7. वह उन्हें कहता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने की प्रतीक्षा करें।
3. प्रेरितों को मिशन दिया गया- प्रेरितों 1:6-8.
   क) पवित्र आत्मा ने उन्हें शक्ति देनी थी।
   ख) उन्होंने यीशु की गवाही देने के लिए यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी के कोने-कोने में जाना था।

II चेलों ने यहूदा के स्थान पर किसी और को चुना- प्रेरितों 1:12-24.

1. 120 के लगभग विश्वासी एकत्रित थे। उन प्रेरितों के साथ, यीशु के भाई, मरियम, यीशु की माता स्त्रियों में से कुछ शिष्य भी थे- प्रेरितों 1:13-17.
2. यहूदा के स्थान पर मत्तिय्याह को चुना गया- प्रेरितों 1:17-26.
   क) यहूदा के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए- प्रेरितों 1:17-20.
   ख) उन्होंने यूसुफ को जो बरनबास कहलाता है उसका उपनाम युसतुस था और मत्तिय्याह को खड़ा किया- प्रेरितों 1:23.

III पवित्र आत्मा का आना- प्रेरितों 2:1-13.

1. पिन्तेकुस्त के पर्व पर सब प्रेरित एक ही स्थान पर इकट्ठे थे- प्रेरितों 2:1.
2. अचानक एक आवाज आई, जैसे तेज आंधी के चलने की होती है और इससे सारा घर जहां वे बैठे थे, भर गया और उनमें से प्रत्येक पर आग की सी जीभें दिखाई दीं- प्रेरितों 2:2-3.
3. वे पवित्र आत्मा से भर गए और जैसे पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने दिया, बोलने लगे- प्रेरितों 2:4.
4. यहूदी लोग जो उस समय पर्व मनाने के लिए भिन्न-भिन्न देशों से आए हुए थे, शोर सुनकर इकट्ठे होने लगे और जब उन्होंने देखा कि चेले (गलीली लोग) उनकी ही भाषा में बोल रहे हैं तो वे हैरान रह गए- प्रेरितों 2:7-11.
5. कई तो हैरान हो गए, परन्तु कई यह कहकर कि इन्होंने शराब पी है, उनका ठट्ठा उड़ाने लगे- प्रेरितों 2:12-13.

IV पतरस व्याख्या करता है- प्रेरितों 2:14-40.

1. उसने बताया कि जो कुछ वह कह रहा था वह योएल की भविष्यवाणी का पूरा होना था- प्रेरितों 2:16-21.
2. उसने यीशु का प्रचार किया- प्रेरितों 2:22-37.
   क) उसने यीशु के जीवन, मृत्यु, जी उठने तथा परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठने को विस्तारपूर्वक समझाया- प्रेरितों 2:22-37.
   ख) उसने बताया कि यीशु को प्रभु भी और मसीह भी बना दिया गया है- प्रेरितों 2:36.
3. लोगों की प्रतिक्रिया:
   क) पतरस से (सुसमाचार का) संदेश सुनकर उन्होंने विश्वास किया, उनके हृदय छिद गए और वे पूछने लगे कि हम क्या करें- प्रेरितों 2:37.
   ख) पतरस ने उन्हें बताया कि वे सब मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए पवित्र आत्मा (का दान) पाने

के लिए बपतिस्मा लें- प्रेरितों 2:38.

ग) पतरस उन्हें समझाने की कोशिश जारी रखता है कि वे अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाएं- प्रेरितों 2:40.

घ) 3000 के लगभग लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया और कलीसिया की शुरुआत हो गई- प्रेरितों 2:41.

V आरम्भिक मसीहियों के जीवन- प्रेरितों 2:42-47.

क) उन्होंने अपने आपको प्रेरितों की शिक्षा में समर्पित कर दिया- प्रेरितों 2:42.

ख) जो कुछ उनके पास था उसे उन्होंने दूसरों में बांटा, यहां तक कि वे अपनी सम्पत्तियां बेच-बचेकर ज़रूरतमंदों की जरूरतों को पूरा करते थे- प्रेरितों 2:44-47.

ग) वे प्रतिदिन एक दूसरे के साथ संगति करते, प्रार्थना करते, और रोटी तोड़ते, और परमेश्वर की महिमा करते थे- प्रेरितों 2:42,44,46-47.

घ) वे सब लोगों की नज़रों में आदरणीय थे- प्रेरितों 2:47.

ङ) प्रेरितों के हाथों से बहुत से आश्चर्यकर्म होते थे- प्रेरितों 2:43.

च) बहुत से लोगों को कलीसिया में आता देखते थे अर्थात वे अपने मित्रों, परिवार और आस-पड़ोस में सुसमाचार का प्रचार करते थे- प्रेरितों 2:47.

सारांश

यीशु ने प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की। पिन्तेकुस्त का दिन आने पर जब आत्मा प्रेरितों पर उतरा उसी दिन कलीसिया का जन्म हुआ। पवित्र आत्मा प्रत्येक मसीही को मिला था, इस कारण कलीसिया में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो रही थी। वे परमेश्वर की आराधना, जरूरतमंद सदस्यों की सहायता और सुसमाचार का प्रचार करते थे।

याद करने के लिए आयत- प्रेरितों 1:8.

पाठ - 2

कलीसिया की स्थापना के बाद की प्रारम्भिक घटनाएं

प्रेरितों 3:5

I लंगड़े आदमी को चंगा करना- आरम्भिक कलीसिया में हुआ पहला लिखित आश्चर्यकर्म- प्रेरितों 3:1-10

1. उन्होंने उसे यीशु मसीह के नाम से चंगा किया- प्रेरितों 3:6.
2. उसे सब लोगों ने देखा- प्रेरितों 3:8; प्रेरितों 4:16 भी देखिए।
3. लोगों ने उसे देखकर पहचान लिया कि वह पहले कैसा था- प्रेरितों 3:10.

II पतरस का दूसरा प्रवचन- प्रेरितों 3:11-26.

1. उस लंगड़े आदमी के चंगा होने से सुसमाचार प्रचार के लिए मार्ग खुल गया- प्रेरितों 3:11-12.
2. उसका प्रवचन- प्रेरितों 3:13-26.

III पतरस और यूहन्ना को जेल होती है और बाद में वे छूट जाते हैं- प्रेरितों 4:1-31.

1. उनका कैद होना- प्रेरितों 4:1-4.
   क) पतरस और यूहन्ना लोगों में वचन सुनाते हैं- प्रेरितों 4:1.
   ख) याजक, मन्दिर का सरदार और सदूकी परेशान थे कि पतरस और यूहन्ना यीशु के जी उठने का प्रचार क्यों कर रहे हैं सो उन्होंने उन्हें जेल भेज दिया- प्रेरितों 4:2-3.
   ग) इतने अत्याचार के बावजूद कलीसिया बढ़ी और वचन को सुनकर मानने वाले पांच हज़ार के लगभग हो गए- प्रेरितों 4:4.
2. जांच-पड़ताल- प्रेरितों 4:5-17.
   क) यूहन्ना और पतरस से पूछताछ की जाती है- प्रेरितों 4:5-7.
   ख) जवाब में पतरस उन्हें सुसमाचार सुनाता है- प्रेरितों 4:5-7.
   ग) हाकिमों ने पतरस और यूहन्ना को धमकाने का फैसला लिया कि वे दोबारा यीशु का नाम न लें- प्रेरितों 4:13-17.
3. रिहा किए गए- प्रेरितों 4:18-31.
   क) हाकिमों ने उन्हें ताकीद की कि न तो यीशु के नाम की बात करें और न ही इसकी शिक्षा दें- प्रेरितों 4:18.
   ख) पतरस और यूहन्ना ने उत्तर दिया कि मनुष्य की आज्ञा से परमेश्वर की आज्ञा मानना जरूरी है- प्रेरितों 4:19-20; तुलना 5:29.
   ग) पतरस और यूहन्ना को दोबारा धमकाया गया- प्रेरितों 4:21.
   घ) पतरस और यूहन्ना अपने इस अनुभव को विश्वासियों के साथ साझा करते हैं- प्रेरितों 4:23-31.

IV विश्वासियों ने अपना धन एक दूसरे से साझा किया- प्रेरितों 4:32-37.

1. सब एक मन, एक तन और एक दूसरे की वस्तुओं में साझी थे- प्रेरितों 4:32.
2. प्रेरितों ने सारी जिम्मेदारी (चंदे) को अपने हाथ में रखा- प्रेरितों 4:33,35,37.

V कलीसिया में अनुशासनः पहला लिखित मामला- प्रेरितों 5:1-11.

1. हनन्याह और सफीरा ने कुछ सम्पत्ति बेची। हनन्याह ने उसमें से कुछ धन अपने पास रख लिया और बाकी प्रेरितों को सौंप दिया। सफीरा को पता था कि वह क्या कर रहा है- - प्रेरितों 5:1-2.

2. उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोलकर उसे धोखा देने का पाप किया- प्रेरितों 5:28.
3. उसका परिणाम क्या हुआ- प्रेरितों 5:5,10.
4. कलीसिया की प्रतिज्ञा- प्रेरितों 5:11

VI आश्चर्यकर्म तथा सताव- प्रेरितों 5:12-42.

1. प्रेरितों के हाथों बहुत से आश्चर्यकर्म (चिह्न तथा अचम्भे काम) हुए- प्रेरितों 5:12-16.
2. प्रधान याजक तथा उसके कुछ साथियों ने जो सदूकी थे, द्वेष के कारण प्रेरितों को कैद करवा दिया। परन्तु बाद में प्रभु के दूत ने उन्हें छुड़ा लिया- प्रेरितों 5:17-25.
3. प्रेरित, लोगों को शिक्षा देते देखे गए, उनसे प्रधान याजक ने पूछताछ की, उन्हें मारा पीटा और यीशु के नाम का प्रचार करने से मना किया बाद में वे रिहा हो गए- प्रेरितों 5:17-25.
4. इस बात से आनन्दित होकर कि यीशु के नाम के कारण अपमानित होने के योग्य गिने गए, वे महासभा को छोड़कर यीशु का संदेश और सुसमाचार सुनाने से न हटे- प्रेरितों 5:41-42.

सारांश-

कलीसिया की आरम्भिक बातों और घटनाओं में चंगा करने के आश्चर्यकर्म, यीशु के नाम का प्रचार करने के कारण प्रेरितों को कैद और विश्वासियों के द्वारा एक दूसरे की सम्पत्ति में सांझ करने का पता चलता है।

याद करने के लिए आयत- प्रेरितों 4:12.

पाठ-3
सात सहायक और स्तिफनुस का काम

I यूनानी भाषा बोलने वालों की इब्रानी यहूदियों के विरुद्ध शिकायत

1. उन्होंने शिकायत की क्योंकि भोजन बांटने में यूनानी विधवाओं की उपेक्षा हो रही थी- प्रेरितों 6:1.
2. प्रेरितों ने इसका समाधान ढूंढ़ने के लिए चेलों को इकट्ठा किया- प्रेरितों 6:2-6.
   क) प्रेरितों ने कहा कि हमें वचन का प्रचार छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में नहीं लगना चाहिए, अर्थात हमें अपने आपको इसमें नहीं उलझाना चाहिए- प्रेरितों 6:2.
   ख) उन्होंने मसीहियों से कहा कि वे अपने में से सात सुनाम पुरुषों को चुनें जो इन विधवाओं की सहायता करने की ज़िम्मेदारी को सम्भालने के लिए पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों- प्रेरितों 6:3.
   ग) प्रेरितों के लिए वचन की सेवकाई और प्रार्थना में लगे रहना आवश्यक था- प्रेरितों 6:4.
   घ) प्रेरितों का सुझाव सबको अच्छा लगा- प्रेरितों 6:5.
   ङ) सात पुरुषों को प्रेरितों के पास लाया गया और उन्होंने उन पर हाथ रखे- प्रेरितों 6:6.

II कलीसिया का विकास- प्रेरितों 6:7.

सुसमाचार फैलता है और यरूशलेम में कलीसिया बड़ी तेज़ी से बढ़ती है। यहां तक कि बहुत से यहूदी याजक भी मसीही बन जाते हैं।

III स्तिफनुस का काम, उत्तर और मृत्यु

1. स्तिफनुस लोगों में आश्चर्यकर्म और अचम्भे के काम करता है- प्रेरितों 6:5-15.
   क) कुछ यहूदी उससे बहस करने लगे परनतु जब वे उसके सामने टिक न सके तो उन्होंने कुछ लोगों को भड़काया कि यह मूसा और परमेश्वर के विरुद्ध बोलता है- प्रेरितों 6:9-11.
   ख) इस प्रकार उन्होंने भीड़ को अपने पीछे लगा लिया और स्तिफनुस को महासभा के सामने पेश किया। उनके झूठे गवाहों ने उस पर आरोप लगाया कि यह मन्दिर और व्यवस्था के विरुद्ध बातें करने से नहीं हटता- प्रेरितों 6:12-14.
   ग) आरोप लगने के बाद, स्तिफनुस का चेहरा स्वर्गदूत जैसा लगता था- प्रेरितों 6:15.
2. स्तिफनुस का उत्तर- प्रेरितों 7:1-53.
   क) स्तिफनुस ने अपने विरुद्ध लगे आरोप का जवाब देने के लिए उन्हें याद करवाया कि इब्राहीम से लेकर, परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसे व्यवहार करता रहा है- प्रेरितों 7:1-47.
   ख) स्तिफनुस ने यह कहकर कि परमेश्वर हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता, उन पर आरोप लगाया कि वे भी अपने बुजुर्गों की तरह ही हैं जो पवित्र आत्मा का विरोध करते हैं और उन्होंने उस धर्मी (यीशु को जो मसीह है) को मरवा दिया- प्रेरितों 7:48-53.
   ग) स्तिफनुस के यह कहने पर कि उसने प्रभु यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ देखा है, तो यहूदी क्रोध से भर गए और उन्होंने उसे शहर के बाहर ले जाकर पत्थर मार मारकर मार दिया- प्रेरितों 7:54-58.
3. स्तिफनुस की मृत्यु- प्रेरितों 7:58-8:2.
   क) स्तिफनुस को जब पत्थर मारे जा रहे थे, तो उसने प्रभु के पास प्रार्थना की कि वह उसकी आत्मा को ग्रहण कर ले- प्रेरितों 7:59.
   ख) स्तिफनुस ने अपने सताने वालों के लिए प्रभु से क्षमा मांगी- प्रेरितों 7:60.
   ग) परमेश्वर के कुछ लोगों ने स्तिफनुस को गाड़ा- प्रेरितों 8:2.

IV सारांश-

कुछ कठिनाइयों के बावजूद यरूशलेम में कलीसिया बढ़ती गई। परन्तु बाद में मसीहियों के विरुद्ध सताव बहुत बढ़ गया।

पाठ-4

कलीसिया का बढ़ना- प्रेरितों 8

I कलीसिया का सताया जाना- प्रेरितों 8:1-3.

1. इसका आरम्भ उसी दिन से हुआ जब स्तिफनुस मारा गया- प्रेरितों 8:1.
2. केवल प्रेरित ही यरूशलेम में रहे, बाकी विश्वासी यहूदिया और सामरिया के इलाकों में बिखर गए- प्रेरितों 8:1.
3. शाऊल कलीसिया को सता रहा था और मसीही विश्वासियों को घरों से निकाल निकाल कर जेलों में पहुंचा रहा था- प्रेरितों 8:3.

II फिलिप्पुस सामरिया में - प्रेरितों 8:4-25.

1. यरूशलेम में कलीसिया पर अत्याचार होने के कारण कलीसिया फैल गई और यरूशलेम के बाहर भी स्थापित हो गई- प्रेरितों 8:4.
   क) फिलिप्पुस ने यीशु का प्रचार करने के साथ ही आश्चर्यकर्म किए जिस कारण बहुत से सामरी लोग आकर्षित हुए प्रेरितों 8:5-8.
   ख) बहुत से लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया- प्रेरितों 8:12.
   ग) जब प्रेरितों को पता चला कि सामरी लोगों ने सुसमाचार को मान लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को सामरिया में भेजा-प्रेरितों 8:14.
2. उन्होंने उनके लिए प्रार्थना की ताकि वे पवित्र आत्मा पाएं- प्रेरितों 8:15.
3. पतरस और यूहन्ना ने विश्वासियों पर हाथ रखे, और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया- प्रेरितों 8:17.
4. शमौन ने जो पहले जादूगर था, जब देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है तो उसने पवित्र आत्मा को मोल लेना चाहा- प्रेरितों 8:18-24.
5. प्रेरितों ने सामरिया के आस पास के क्षेत्रों में सुसमाचार का प्रचार किया- प्रेरितों 8:25.

III फिलिप्पुस को दक्षिण में (खोजे के पास) भेजा गया- प्रेरितों 8:26-39.

1. परमेश्वर के स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस के साथ बात करके कहा था कि वह उस मार्ग में जाए जो यरूशलेम से गाजा को जाता है- प्रेरितों 8:26.
2. फिलिप्पुस को इथियोपिया का एक मनुष्य मिला, जो वहां की रानी का मन्त्री था- प्रेरितों 8:27.
3. फिलिप्पुस ने जब देखा कि वह खोजा यशायाह की पुस्तक में से पढ़ रहा है, तो वह उसे उसी शास्त्र से आरम्भ करके सुसमाचार सुनाने लगा- प्रेरितों 8:30-35.
4. जब वे चलते-चलते ऐसी जगह पहुंचे जहां काफी पानी था, तो खोजे ने उससे बपतिस्मा देने के लिए कहा- प्रेरितों 8:36-39.
5. बपतिस्मा लेने के बाद वह खोजा आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया- प्रेरितों 8:39.
6. परन्तु पवित्र आत्मा फिलिप्पुस को अशदोद में ले गया। वहां वह प्रचार करते-करते कैसरिया में आ गया-प्रेरितों 8:39-40.

सारांश-

सामरिया में बड़ी खुशी आई थी। यरूशलेम में से विश्वासी बिखर गए थे, उनमें से बहुत से सामरिया में आ गए। फिलिप्पुस ने सामरियों का ध्यान यीशु के विषय में संदेश सुनाकर और अश्चर्यकर्म करके अपनी ओर आकर्षित किया। बहुत से लोगों ने विश्वास करके बपतिस्मा लिया और पवित्र आत्मा भी पाया। यरूशलेम से पतरस और यूहन्ना ने आकर उनमें से कइयों पर हाथ रखे। फिलिप्पुस ने परमेश्वर के स्वर्गदूत की आज्ञा मानकर इथियोपिया के एक प्रभावशाली व्यक्ति को परिवर्तित किया। इस प्रकार सुसमाचार उस देश में भी पहुंच गया।

पाठ-5

शाऊल का मन परिवर्तन- प्रेरितों 9

(अध्याय 22 और 26 भी देखिए)

I शाऊल का 'काम'- प्रेरितों 9:1-2.

1. वह चेलों (विश्वासियों) की हत्या के लिए धमकाता था- 9:1.
2. और मसीही लोगों की खोज में कि उन्हें यरूशलेम की जेलों में फैंके, उसने दमिश्क जाने के लिए महायाजक की ओर से दमिश्क के समाजों के नाम चिट्ठियां लीं - 9:2.

II शाऊल दमिश्क के मार्ग पर- प्रेरितों 9:3-8.

1. जब वह दमिश्क में पहुंचा, तो आकाश से एक रोशनी उसके आस पास चमकी और वह भूमि पर गिर गया- 9:3,4.
2. एक आवाज आई, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?'' उसने पूछा, ''हे प्रभु, तू कौन है ?''- 9:4,5.
3. उत्तर मिला कि मैं यीशु हूं और उसने पौलुस को आज्ञा दी कि दमिश्क में जा और वहां तुझे और निर्देश दिए जाएंगे- 9:6.
4. शाऊल कुछ देख न सका और उसके साथियों ने उसे दमिश्क में पहुंचाया- 9:8.
5. हनन्याह नामक एक विश्वासी जो दमिश्क में रहता था, को प्रभु ने शाऊल के पास भेजा ताकि वह फिर से देखने लग पड़े- 9:10-17.
6. शाऊल का अन्धापन जाता रहा और उसने बपतिस्मा लिया, फिर वह कई दिन तक दमिश्क में चेलों के साथ रहा- 9:18-19.

III शाऊल प्रचार करना आरम्भ करता है- 9:20-31.

1. उसने यहूदी सभा में प्रचार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि वे जानते थे कि उसने यरूशलेम में क्या किया है और वह दमिश्क में किस काम के लिए आया है- 9:20-31.
2. दमिश्क के यहूदियों ने उसे मारने की योजना बनाई, परन्तु वह बच गया क्योंकि विश्वासियों ने उसे टोकरे में बिठाकर शहर की दीवार से उतार दिया- 9:22-25.
3. शाऊल यरूशलेम चला गया।
   क) वहां विश्वासी उससे डरते थे परन्तु वह वहां सुसमाचार का प्रचार करता रहा- 9:26-29.
   ख) यरूशलेम में यहूदियों ने उसे मारने की कोशिश की, परन्तु मसीहियों ने उसे कैसरिया में लाकर तरसुस की ओर भेज दिया- 9:30.

IV कलीसिया का विकास- 9:31.

कलीसिया यहूदिया, गलील और सामरिया में संख्या तथा आत्मिकता दोनों में बढ़ रही थी; और सुखी थी।

V सारांश

बेशक शाऊल, कलीसिया को बिना किसी डर के सता रहा था, परन्तु प्रभु दमिश्क के मार्ग में उसे स्वयं मिला और उसे आज्ञा दी कि तू मेरे लिए अन्यजातियों और यहूदियों में प्रचार कर। शाऊल परमेश्वर के वचन का बहुत बड़ा प्रचारक बन गया।

याद करने के लिए आयत- 9:15.

पाठ-6

सुसमाचार अन्यजातियों तक पहुंचाता है

प्रेरितों 10-11

I कुरनेलियुस और पतरस- अन्यजाति का एक आदमी परमेश्वर की खोज करता है- 10:1-33.

1. कुरनेलियुस, जो भक्त और सेना में सूबेदार था, दर्शन देखता है-10:1-8.
   क) परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं और उसके धर्म के कामों को स्वीकार कर लिया- 10:4.
   ख) परमेश्वर उसे पतरस को बुलाने के लिए कहता है- 10:5.
2. परमेश्वर पतरस को तैयार करता है- 10:9-22.
   क) चादर वाला दर्शन- 10:10-17.
   ख) कुरनेलियुस के लोगों का पहुंचना- 10:18-22.
3. पतरस कुरनेलियुस के घर जाता है- 10:23-33.
   क) पतरस वह सब ब्यान करता है जो परमेश्वर ने उसे दर्शन में दिखाया- 10:28.
   ख) कुरनेलियुस ब्यान करता है कि परमेश्वर ने उसे क्या बताया है- 10:30-33.
4. पतरस अन्यजातियों में सुसाचार का प्रचार करता है- 10:34-43.
   क) परमेश्वर बिना पक्षपात के प्रत्येक जाति में से लोगों को ग्रहण करता है- 10:34-35.
   ख) यीशु का सुसमाचार- 10:36-43.
   ग) परिणामस्वरूप
      1. प्रवचन सुनने वालों में से हर एक पर पवित्र आत्मा उतरा- 10:44-46.
      2. वचन को सुनने वालों ने यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लिया- 10:47-48.

II पतरस यरूशलेम में यह वार्ता सुनाता है- 11:1-18.

1. अन्यजातियों के साथ मिलने के कारण कुछ यहूदी मसीयिहों ने पतरस की आलोचना की- 11:1-3.
2. पतरस खोलकर बताता है कि क्या हुआ और उसने अन्यजातियों में सुसमाचार का प्रचार क्यों किया- 11:4-17.
3. यहूदी विश्वासियों ने पतरस की बात मान ली और परमेश्वर की महिमा की कि उसने अन्यजातियों के लोगों को भी अनन्त जीवन देने का अवसर दिया है- 11:18.

सारांश

संसार के इतिहास की सबसे महान घटनाओं में से कुरनेलियुस का मन परिवर्तन एक महत्वपूर्ण घटना है: अब्राम से किया परमेश्वर का वायदा पूरा हुआ- उत्पत्ति 12:3; गलतियों 3:14.

याद करने के लिए आयत- प्रेरितों 10:34-35.

पाठ-7

अन्ताकिया में कलीसिया पर अत्याचार

प्रेरितों 11-12

I पतरस ने यरूशलेम में प्रेरितों व दूसरे भाइयों को कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन का समाचार दिया; उन्होंने परमेश्वर की महिमा की कि अन्यजातियों के लोग भी अनन्त जीवन पा सकते हैं- प्रेरितों 11:1-18.

II अन्ताकिया की कलीसिया- प्रेरितों 11:19-30.

1. कुप्रुस और कुरेने के कुछ विश्वासी अन्ताकिया में, अन्यजातियों में सुसाचार का प्रचार करने लगे और बहुत से लोग प्रभु की ओर मुड़े- प्रेरितों 11:19-21.
2. बरनबास अन्ताकिया में आया और बाद में शाऊल को ढूंढ़कर अन्ताकिया में अपने साथ लाया- प्रेरितों 11:22-26.
3. अगबुस की भविष्यवाणी से, पता चल गया था कि भयंकर अकाल पड़ने वाला है जिसका प्रभाव पूरे देश में होगा। अन्ताकिया के मसीहियों ने यरूशलेम की कलीसिया के लिए सहायता भेजी- प्रेरितों 11:27-30.

III हेरोदेस ने कलीसिया को सताया और उसकी मृत्यु हो गई- प्रेरितों 12.

1. हेरोदेस ने यूहन्ना के भाई याकूब को मरवा दिया- प्रेरितों 12:1-2.
2. इस हत्या से यहूदी बड़े खुश हुए, इससे उत्साहित होकर हेरोदेस ने पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया- प्रेरितों 12:3.
3. पतरस को कैद हुई।
   क) कैद में पतरस की निगरानी की गई- प्रेरितों 12:4-5.
   ख) विश्वासियों ने उसके लिए प्रार्थना की- प्रेरितों 12:5.
   ग) प्रभु के एक दूत ने पतरस को स्वतन्त्र करवाया- प्रेरितों 12:6-10.
   घ) पतरस, यूहन्ना (जिसे मरकुस भी कहते हैं) की माता मरियम के घर आया और उसने उन्हें बताया कि प्रभु ने उसे कैसे कैद से छुड़ा लिया है- प्रेरितों 12:12-17.
4. हेरोदेस
   क) यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में रहने लगा- प्रेरितों 12:19.
   ख) एक दिन जब वह लोगों के सामने बोलने लगा तो लोग कहने लगे कि यह तो कोई देवता है। प्रभु के एक दूत ने उसे मारा क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा न की इसलिए वह कीड़े पड़के मर गया- प्रेरितों 12:20-23.
5. सुसमाचार का वचन बढ़ता और फैलता गया- प्रेरितों 12:24.

V सारांश

कुरनेलियुस के मन परिवर्तन के साथ अन्यजातियों में प्रचार समाप्त नहीं हुआ, बल्कि कलीसिया अन्ताकिया में विशेषकर अन्यजातियों में फैलती गई। इसी दौरान हेरोदेस ने कलीसिया पर अत्याचार करने आरम्भ कर दिए, परन्तु वह स्वयं ही मरकर खत्म हो गया।

याद करने के लिए आयत- प्रेरितों 11:21.

पाठ-8

पौलुस और बरनबास की पहली मिशनरी यात्रा- यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस

प्रेरितों 13-15

I तैयारी और रवानगी- प्रेरितों 13:1-4.

1. पवित्र आत्मा ने पौलुस और बरनबास को मिशनरी बनने के लिए बुलाया- प्रेरितों 13:2-3.
2. उन्हें पवित्र आत्मा ने भेजा- प्रेरितों 13:4.

II उनका मिशन:

जाकर, सुसमाचार का प्रचार करना, कलीसिया स्थापित करना- प्रेरितों 13:5-14:23.

1. कुप्रुस का टापू- प्रेरितों 13:4-12.
   क) उन्होंने यहूदियों के आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया- प्रेरितों 13:5.
   ख) इलीमास टोन्हे और सिरगियुस पौलुस सूबे का मनपरिवर्तन- प्रेरितों 13:6-12
2. पिसिदिया का अन्ताकिया- प्रेरितों 13:13-52.
   क) पौलुस ने आराधनालय में प्रचार किया- प्रेरितों 13:16-41.
   ख) एक सप्ताह के बाद लगभग सारा शहर (यहूदी और अन्यजातियां) ही पौलुस और बरनबास को सुनने के लिए इकट्ठा हो गया- प्रेरितों 13:44.
   ग) यहूदी डाह से भर गए और पौलुस के विरुद्ध बोलने लगे- प्रेरितों 13:45.
   घ) पौलुस और बरनबास ने अन्यजातियों में सुसमाचार ले जाने की जिम्मेदारी को समझा क्योंकि यहूदियों ने इसे ठुकरा दिया था- प्रेरितों 13:46-47.
   ङ) अन्यजातियों के लोग आनन्दित हुए और बहुतों ने विश्वास किया, परन्तु यहूदी पौलुस और बरनबास को सताने लगे- प्रेरितों 13:48-50.
   च) पौलुस और बरनबास सुसमाचार का प्रचार करने दूसरी दिशा में चले गए- प्रेरितों 13:51.

3. इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे- प्रेरितों 14:1-23.
   क) बहुत से यहूदियों और अन्यजाति लोगों ने विश्वास किया, परन्तु जिन्होंने विश्वास न किया वे पौलुस और बरनबास के साथ दूसरे विश्वासियों को सताने लगे- प्रेरितों 14:2,5.
   ख) पौलुस और बरनबास बचकर लुस्त्रा और दिरबे में आ गए और वहां सुसमाचार सुनाते रहे- प्रेरितों 14:6-7.
   ग) लोग पौलुस और बरनबास को देवताओं की तरह पूजने लग पड़े क्योंकि उन्होंने एक लंगडे को चंगा किया था- प्रेरितों 14:8-14.
   घ) पिसिदिया के अन्ताकिया और इकुनियुम से कुछ यहूदियों ने आकर लोगों को भड़काया और उन्होंने पौलुस पर पथराव किया- प्रेरितों 14:19.
   ङ) पौलुस और बरनबास दिरबे की ओर चले गए और वहां के बहुत से लोग मसीही बन गए- प्रेरितों 14:20-21.

4. वे लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया की ओर लौट गए और विश्वासियों को दृढ़ करने के साथ-साथ हर कलीसिया में प्राचीन (ऐल्डर) ठहराते गए- प्रेरितों 14:21-23.

III यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस- प्रेरितों 15:1-35.

1. कुछ यहूदी यह सिखाने लगे कि मूसा की व्यवस्था को पूरा करना आवश्यक है- प्रेरितों 15:1,5.
2. पौलुस और बरनबास और कुछ और विश्वासियों को बाकी प्रेरितों तथा यरूशलेम की कलीसिया के प्राचीनों के साथ इस पर विचार करने के लिए यरूशलेम भेजा गया- प्रेरितों 15:2.
3. पतरस ने अन्यजातियों में से आए हुए मसीहियों का पक्ष लिया- प्रेरितों 15:7-11.
4. पौलुस और बरनबास बताते हैं कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे काम किया- प्रेरितों 15:13-21.
   क) मूसा की व्यवस्था अन्यजातियों पर लादना अनावश्यक भार होना था- प्रेरितों 15:19.
   ख) अन्यजातियों में से आने वालों को चाहिए कि वे मूर्तियों से दूषित हुए भोजन, व्यभिचार, गला घोंटे हुए मांस और लोहू से परहेज करें- प्रेरितों 15:20.
5. फैसला तथा अन्यजायितों के नाम पत्र- प्रेरितों 15:22-29.
6. अन्यजातियों में से आने वालों द्वारा पत्र को पढ़ना और आनन्द करना- प्रेरितों 15:31.

सारांश-

कुप्रुस, पिसिदिया के अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे से होते हुए सुसमाचार का प्रचार करते, विरोध सहते हुए पौलुस और बरनबास ने अन्यजातियों के लिए स्थान के विषय में बात करनी थी। कॉन्फ्रेंस का परिणाम बड़ा ही संतोषजनक था और पौलुस और बरनबास प्रभु के वचन की शिक्षा देने और प्रचार करने के लिए अन्ताकिया में पहुंच गए।

याद करने के लिए आयत- प्रेरितों 13:38-39.

पाठ-9

पौलुस और बरनबास अलग होते हैं, पौलुस यूरोप में सुसमाचार ले जाता है

प्रेरितों 15:36-21:41

I पौलुस और बरनबास का झगड़ा और उनका अलग होना- प्रेरितों 15:36-41.

1. उन्होंने निर्णय लिया कि अपनी पहली मिशनरी यात्रा में प्रचार करने से जहां तक लोग मसीही बने थे, उनका पता किया जाए- प्रेरितों 15:37-38.
2. उनमें झगड़ा हो गया: बरनबास चाहता था कि यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लें; लेकिन पौलुस उसे साथ नहीं ले जाना चाहता था क्योंकि वह पहले उनसे अलग हो गया था- प्रेरितों 15:37-38.
3. बरनबास और मरकुस कुप्रुस को चले गए; पौलुस और सीलास सूरिया और कलीकिया को चले गए-प्रेरितों 15:39-41.

II मकिदुनिया की यात्रा- प्रेरितों 16:1-40.

1. पौलुस का दर्शन- प्रेरितों 16:6-10.
   क) आत्मा ने पौलुस और बरनबास को एशिया या बितुनिया में जाने से मना कर दिया- प्रेरितों 16:6-7.
   ख) पौलुस ने दर्शन में देखा कि मकिदुनिया से एक मनुष्य बिनती कर रहा है कि आकर हमारी सहायता करो। वे समझ गए कि परमेश्वर उन्हें मकिदुनिया में जाकर प्रचार करने के लिए कह रहा है- प्रेरितों 16:9-10.
2. पौलुस और सीलास फिलिप्पी में- प्रेरितों 16:11-40.
   क) उन्होंने लुदिया को ढूंढ़कर वचन सिखाया और उसे बपतिस्मा दिया- प्रेरितों 16:11-15.
   ख) उनका सामना एक लड़की से हुआ जिसमें दुष्ट आत्मा थी - प्रेरितों 16:11-19.

1. उस आत्मा के कारण वह लड़की भविष्य की बातें बताती थी और अपने मालिकों के लिए आमदनी का अच्छा स्रोत थी, वह पौलुस और सीलास के पीछे-पीछे लोगों में घोषणा करती थी कि ये लोग तुम्हें उद्धार का मार्ग बताते हैं- प्रेरितों 16:16-17.
2. पौलुस ने उस आत्मा को लड़की में से निकाल दिया- प्रेरितों 16:18.
3. उस लड़की के मालिकों ने पौलुस और सीलास को पकड़वा दिया, उन्हें अधिकारियों के सामने पेश किया गया जिन्होंने दोनों को पीटा और जेल में डाल दिया- प्रेरितों 16:19-23

   ग. दारोगे से मिलना- प्रेरितों 16:24-40.

1. आधी रात को जब पौलुस और सीलास भजन गाते और प्रार्थना करते थे, तो एक भूकम्प आया जिससे सारे कैदियों की बेड़ियां खुल गईं- प्रेरितों 16:25-26.
2. दारोगा आत्महत्या करने लगा परन्तु पौलुस और सीलास ने उसे रोका और उसे और उसके परिवार को सुसमाचार बताया और उसे बपतिस्मा दिया- प्रेरितों 16:27-24.
3. पौलुस और सीलास को, जो रोमी नागरिक थे, जेल से रिहा कर दिया गया और वे मसीही लोगों को हौसला देते हुए फिलिप्पी से चले गए- प्रेरितों 16:35-40.

III थिस्सलुनीके तथा बिरीया- प्रेरितों 17:1-15.

1. पौलुस और सीलास थिस्सलुनीके में आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया- प्रेरितों 17:1-4.
   क) कई यहूदियों ने और बहुत से अन्यजातियों ने विश्वास किया- प्रेरितों 17:4.
   ख) यहूदियों ने शहर को विश्वासियों के विरुद्ध भड़का दिया- प्रेरितों 17:5-9.

2. पौलुस और बरनबास बिरीया जाने के लिए रात को वहां से निकल गए, वहां पहुंचकर उन्होंने आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया- प्रेरितों 17:10-15.
   क) यहूदियों ने पौलुस की बातों को शास्त्रों से मिलाकर जब देखा कि वह सत्य बोल रहा है तो जल्दी से सुसमाचार को मान लिया- प्रेरितों 17:11.
   ख) बहुत से यहूदियों और यूनानियों ने विश्वास किया- प्रेरितों 17:12.
   ग) थिस्सलुनीके के यहूदियों ने बिरीया के लोगों को भड़काया लेकिन पौलुस वहां से बचकर अथेने को चला गया- प्रेरितों 17:13-15.

IV अथेने में- प्रेरितों 17:17-34.

1. तीमुथियुस और सीलास की प्रतीक्षा करते हुए, पौलुस ने जब नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखा तो उसका जी जल गया- प्रेरितों 17:16.
   क) इस कारण वह समाज में यहूदियों और परमेश्वर का भय मानने वाले यूनानियों को, आराधनालयों और बाज़ारों में लोगों को समझाता था- प्रेरितों 17:17.
   ख) वह अरियुपगुस में विद्वानों को भी मन फिराने और जी उठने की शिक्षा देता था- प्रेरितों 17:18-32.
2. कइयों ने विश्वास किया- प्रेरितों 17:34.

V पौलुस कुरिन्थुस में- प्रेरितों 18:1-17.

1. पौलुस अक्विला और प्रिस्किल्ला से मिला, उसने उनके साथ काम किया और सब्त के दिन वह यहूदियों और यूनानियों में प्रवचन सुनाता था- प्रेरितों 18:1-4.
2. यहूदियों के विरोध के कारण पौलुस ने अन्यजातियों में जाने का निर्णय लिया और उसने तीतुस यूस्तुस नाम के एक व्यक्ति के घर से आरम्भ किया जिसका घर आराधनालय के पास ही था- प्रेरितों 18:6-7.
3. एक दिन दर्शन में प्रभु से यह निश्चय जानकर कि कुरिन्थुस में ही प्रचार करता रह, इसलिए पौलुस वहां डेढ़ वर्ष तक रहा-प्रेरितों 18:11.
   क) आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस सहित दूसरे बहुत से लोगों ने विश्वास करके बपतिस्मा लिया- प्रेरितों 18:8.
   ख) यहूदी, पौलुस के विरुद्ध एक हो गए और उसे वहां के हाकिम गल्लियो के पास ले गए- प्रेरितों 18:12.
   ग) परन्तु गल्लियो ने उनका एक भी आरोप नहीं माना क्योंकि यह मामला दिवानी नहीं था- प्रेरितों 18:14-17.

VI पौलुस इफिसुस में- प्रेरितों 18:19-19:41.

1. पौलुस सीरिया के अन्ताकिया में दोबारा आया, परन्तु कुछ समय बाद उसने गलतिया और फ्रुगिया के इलाकों में फिरकर चेलों को दृढ़ करने का फैसला किया- प्रेरितों 18:22-23.
2. अप्पुलोस इफिसुस में प्रचार करता है- प्रेरितों 18:24-28.
   क) उसे शास्त्रों का बड़ा ज्ञान था और वह यीशु के बारे में अच्छी तरह बता रहा था। पर केवल यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में ही जानता था- प्रेरितों 18:24-25.
   ख) प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे अपने घर ले जाकर प्रभु का मार्ग और भी अच्छे ढंग से बताया- प्रेरितों 18:26.
   ग) अप्पुलोस अखया को चला गया और वहां उसने मसीही लोगों की बड़ी सहायता की- प्रेरितों 18:27-28.
3. पौलुस को इफिसुस में कुछ विश्वासी मिले- प्रेरितों 19:1-7.
   क) उन्होंने केवल यूहन्ना का बपतिस्मा ही पाया था- प्रेरितों 19:1-3.
   ख) पौलुस ने उन्हें यीशु के नाम में बपतिस्सा दिया, और जब उसने उन पर हाथ रखे तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा- प्रेरितों 19:8-41.
4. पौलुस ने इफिसुस में प्रचार किया- प्रेरितों 19:8-41.

क) उसने आराधनालय में प्रचार करके शुरुआत की- प्रेरितों 1:8.

ख) जब कई लोग इस मार्ग के विरुद्ध बोलने लगे तो पौलुस चेलों को अपने साथ तुरन्नुस की पाठशाला में ले गया जहां वह हर रोज़ दो वर्ष तक वचन सुनाता रहा- प्रेरितों 19:9-10.

ग) उस समय एशिया के सारे इलाके ने प्रभु का वचन सुन लिया था और परमेश्वर ने पौलुस के माध्यम से बड़े आश्चर्यकर्म किए - प्रेरितों 19:10-12.

घ) इससे प्रभु का वचन दूर-दूर तक फैल गया- प्रेरितों 19:13-20.

5. इफिसुस में गड़बड़ी- प्रेरितों 19:23-41.

क) जो लोग मूर्तियां बनाते थे, वे डर गए कि कहीं पौलुस की शिक्षाओं से उनका व्यवसाय ही न चौपट हो जाए- प्रेरितों 19:23-28.

ख) शहर में बड़ी गड़बड़ी तथा दंगा हुआ- प्रेरितों 19:29-34.

ग) शहर के मन्त्री ने भीड़ को शांत किया- प्रेरितों 19:35-41.

VII पौलुस मकिदुनिया और यूनान में जाता है- प्रेरितों 20:1-6.

1. जाकर वह लोगों को उत्साहित करता है- प्रेरितों 20:2.
2. जब यहूदियों ने उसे मारने की योजना बनाई तो वह मकिदुनिया होकर लौट आया- प्रेरितों 20:3.

VIII पौलुस त्रोआस और मिलेतुस में- प्रेरितों 20:6-38.

1. पौलुस ने त्रोआस में सप्ताह के पहले दिन मसीहियों को वचन सुनाया- प्रेरितों 20:6-12.
2. जब पौलुस मिलेतुस में था तो उसने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को समझाने के लिए बुलाया-प्रेरितों 20:17-36.
3. उसने उनसे अलग होते समय, प्रार्थना की, और वे बड़े दुखी हुए, क्योंकि उसने उनसे कहा था कि वे दोबारा उसे नहीं देखेंगे- प्रेरितों 20:36-38.

सारांश-

पौलुस और बरनबास ने अलग होकर, उससे कहीं अधिक काम किया जितना उन्होंने इकट्ठे रहकर किया था। पौलुस नये-नये क्षेत्रों में जा सका और वहां जाकर उसने उन इलाकों में कलीसिया की स्थापना की। इस प्रकार कलीसिया यूरोप तक फैल गई।

पाठ-10

पौलुस रोम में जाता है

प्रेरितों 21-28

I पौलुस रोम जाता है- प्रेरितों 21:1-25.

1. सूर में भाइयों ने पौलुस को चेतावनी दी कि वह यरूशलेम में न जाए- प्रेरितों 21:4.
2. अगबुस नामक एक भविष्यवक्ता ने चेतावनी दी कि पौलुस के साथ क्या होने वाला है- प्रेरितों 21:10-14.
   क) कैसरिया में भाइयों ने पौलुस से बिनती की कि वह यरूशलेम न जाए।
   ख) पौलुस ने उत्तर दिया कि वह तो प्रभु यीशु के नाम के लिए मरने को भी तैयार है।
3. पौलुस यरूशलेम में याकूब और दूसरे प्राचीनों से मिलने गया- प्रेरितों 21:18.
   क) उन्होंने पौलुस को बताया कि लोग बातें कर रहे हैं कि पौलुस मूसा की व्यवस्था के विषय में अन्यजातियों के लोगों को उल्टी शिक्षा देता है- प्रेरितों 21:20-22.
   ख) उन्होंने पौलुस को सुझाव दिया कि चार दूसरे लोगों को साथ लेकर वह भी अपने आपको शुद्ध कर ले, ताकि यह लगे कि वह भी व्यवस्था को पूरा करता है- प्रेरितों 21:23-24.
   ग) प्राचीनों ने अपनी बात दोहराई कि अन्यजातियों के लोगों के बारे में उनका निर्णय व्यवस्था के सम्बन्ध में नहीं था बल्कि उन्होंने तो केवल यह कहा था कि वे कुछ बातों से बचे रहें- प्रेरितों 21:25.

II पौलुस पर आरोप लगता है और वह गिरफ्तार हो जाता है- प्रेरितों 21:26-40.

एशिया के कुछ यहूदियों ने सारे नगर को पौलुस के विरुद्ध यह कहके भड़का दिया कि इसने अन्यजातियों के लोगों को मन्दिर में लाकर पवित्रता भंग की है और इसने यहूदियों और व्यवस्था के विरुद्ध शिक्षा दी है- प्रेरितों 21:26-30.

1. वे पौलुस को पकड़कर मन्दिर से बाहर ले गए- प्रेरितों 21:30.
2. वे पौलुस को मार देना चाहते थे- प्रेरितों 21:31.
3. रोमी लोगों ने पौलुस को गिरफ्तार कर लिया- प्रेरितों 21:33.

III पौलुस लोगों के सामने अपना पक्ष रखता है- प्रेरितों 22:1-21.

1. पौलुस में एक कट्टर यहूदी वाले सभी गुण थे - प्रेरितों 22:3.
2. पहले वह भी मसीहियों पर अत्याचार करता था - प्रेरितों 22:4-5.
3. पौलुस ने अपने मन परिवर्तन के बारे में बताया- प्रेरितों 22:6-16.
4. पौलुस ने बताया कि कैसे उसे अन्यजातियों के पास भेजा गया- प्रेरितों 22:17-21.
5. उसका यह दावा सुनकर कि वह अन्यजातियों के पास भी गया, लोग एक बार फिर भड़क उठे- प्रेरितों 22:22-23.

IV हाकिमों ने पौलुस से पूछताछ की- प्रेरितों 22:24-29.

1. पौलुस को कैद हुई और कोड़े मारने की तैयारी थी- प्रेरितों 22:24-25.
2. पौलुस ने अपना परिचय एक रोमी नागरिक के रूप में दिया- प्रेरितों 22:25-27.
3. सिपाही चौकस हो गए और उसे हानि पहुंचाने से डर गए- प्रेरितों 22:29.

V पौलुस यहूदी महासभा के सामने - प्रेरितों 22:30-23:10.

1. पौलुस महायाजक के सामने- प्रेरितों 23:1-5.

2. पौलुस ने फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा लगा लिया- प्रेरितों 23:6-10.

VI प्रभु ने पौलुस पर यह प्रकट करके उसे दिलेर किया कि वह प्रभु की गवाही रोम में देगा- प्रेरितों 23:11.

VII पौलुस की हत्या की योजनाएं- प्रेरितों 23:12-22.

VIII पौलुस रोमी राज्यपाल फेलिक्स के सामने - प्रेरितों 23:23-24:27.

1. पौलुस को बचाने और फेलिक्स के सामने पेशी के लिए कैसरिया में ले जाया गया- प्रेरितों 23:23-25.
2. फेलिक्स के सामने पौलुस पर आरोप लगाया गया- प्रेरितों 24:22-9.
3. फेलिक्स के आगे पौलुस का उत्तर- प्रेरितों 24:10-21.
4. पौलुस ने फेलिक्स और उसकी पत्नी, द्रुसिल्ला को सुसमाचार सुनाया- प्रेरितों 24:24-25.

IX पौलुस, रोमी राज्यपाल फेस्तुस के सामने- प्रेरितों 25:1-2.

1. पौलुस पर यहूदियों ने फिर से आरोप लगाया- प्रेरितों 25:7.
2. पौलुस अपना पक्ष रखता है -प्रेरितों 25:8-12.
   क) वह अपने निर्दोष होने के बारे में बताता है- प्रेरितों 25:11.
   ख) वह अपना न्याय रोमी राज्यपाल से करवाने की अपील करता है- प्रेरितों 25:11.

X पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने - प्रेरितों 25:13-26:32

1. राजा स्वयं भी पौलुस के मुख से सुनना चाहता था- प्रेरितों 25:22.
2. फेस्तुस ने कहा कि उसे पौलुस में कुछ ऐसा दोष नहीं मिला जिससे उसे मौत की सजा दी जाए - प्रेरितों 25:25.
3. पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने उत्तर देता है- प्रेरितों 26:1-23.
4. पौलुस राजा अग्रिप्पा को मसीह में लाने का प्रयास करता है- प्रेरितों 26:25-29.
5. फेस्तुस, अग्रिप्पा और दूसरे लोगों ने मिलकर निष्कर्ष निकाला कि पौलुस ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे उसे मौत की सजा दी जा सके- प्रेरितों 26:31

XI पौलुस को रोम में भेजा गया- प्रेरितों 27:1-28:10.

1. कुछ भाई (मसीही), सिपाहियों की निगरानी में, एक जहाज़ में पौलुस के साथ रोम गए- प्रेरितों 27:1-2
2. पौलुस ने जहाज में बैठे लोगों को सावधान किया कि वे एक बड़ी मुश्किल में पड़ने वाले हैं; और जहाज के साथ उसमें पड़े सामान और यहां तक कि उनके प्राणों की भी हानि होने वाली है- प्रेरितों 27:10.
3. समुद्र में तूफ़ान - प्रेरितों 27:14-44.
   क) जहाज डूब गया- प्रेरितों 27:41.
   ख) सब लोग बचकर किनारे पर पहुंच गए- प्रेरितों 27:44.
4. मालटा टापू पर - प्रेरितों 28:1-10.
   क) पौलुस के हाथ से एक सांप चिपक गया पर उसने उसे काटा नहीं (अर्थात उसकी कुछ हानि नहीं हुई)- प्रेरितों 28:3-9.
   ख) पौलुस ने फिर कुछ बिमारों को चंगा किया और रोम में चला गया- प्रेरितों 28:8-10.
5. पौलुस रोम में पहुंचा- प्रेरितों 28:11-14.
   1. वहां के मसीही लोगों ने उसका हार्दिक स्वागत किया- प्रेरितों 28:15.
   2. जो सिपाही पौलुस की निगरानी कर रहा था उसके साथ पौलुस को अलग रहने की अनुमति मिल गई- प्रेरितों

28:16.

3. पौलुस ने अपनी सफाई देने के लिए यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया- प्रेरितों 28:17-22.
4. पौलुस ने उन्हें सुसमाचार सुनाया- प्रेरितों 28:23-28.

1. कई लोगों ने विश्वास किया; कइयों ने नहीं- प्रेरितों 28:24.
2. पौलुस ने उन्हें बताया कि उन्होंने सुसमाचार को ठुकरा दिया है इसलिए में अब अन्यजातियों के पास जाऊंगा- प्रेरितों 28:30-31.

   क) दो वर्ष तक पौलुस किराए के मकान में रहकर घर-घर जाकर प्रचार करता रहा- प्रेरितों 28:30-31.

सारांश-

पहरे में रहने का सारा समुद्री सफर और राजाओं और राज्यपालों के सामने उसके पेश होने में परमेश्वर का हाथ है, ताकि सब लोग परमेश्वर की बुद्धि और इच्छा को जान लें, चाहे वे स्वर्गीय स्थानों में प्रधान और अधिकारी ही हों- इफिसियों 3:10.

याद करने के लिए आयत- 21:13.

परिशिष्ट: प्रेरितों के काम पुस्तक की घटनाएं

अध्याय 1

1. पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा
2. यीशु का ऊपर उठाया जाना
3. मत्तिय्याह यहूदा के स्थान पर प्रेरित बनता है

अध्याय 2

1. पवित्र आत्मा का आना
2. सुसमाचार का प्रचार पहली बार किया जाता है
3. कलीसिया की स्थापना

अध्याय 3

1. पौलुस और यूहन्ना एक लंगड़े आदमी को चंगा करते हैं और मन्दिर में प्रचार करते हैं

अध्याय 4

1. पतरस और यूहन्ना को कैद होती है
2. यहूदी हाकिम पतरस और यूहन्ना को कहते हैं कि यीशु का प्रचार न करो
3. पतरस और यूहन्ना छूटते हैं; विश्वासी लोग प्रचार करने की और दिलेरी के लिए प्रार्थना करते हैं
4. विश्वासी एक दूसरे की सम्पत्ति में सांझ करते हैं

अध्याय 5

1. हनन्याह और सफीरा पाप करते हैं और मर जाते हैं
2. प्रेरित और भी बहुत से आश्चर्यकर्म करते हैं; कलीसिया बढ़ती है
3. प्रेरित गिरफ्तार हो जाते हैं; स्वर्गदूत उन्हें छुड़ाता है
4. प्रधान याजक और यहूदी महासभा प्रेरितों को ताड़ना देती है, उन्हें कोड़े मारती है, यीशु का प्रचार करने से मना करती है और फिर छोड़ देती है

अध्याय 6

1. यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों में गड़बड़ होती है
2. इस समस्या के समाधान के लिए सात (डीकन?) चुने जाते हैं
3. लोग स्तिफनुस को पकड़कर महासभा के सामने लाते हैं

अध्याय 7

1. स्तिफनुस उत्तर देता है
2. स्तिफनुस की मृत्यु

अध्याय 8

1. यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा अत्याचार होता है
2. शाऊल (पौलुस) कलीसिया को सताता है

3. प्रेरितों को छोड़ बाकी सब चेले यहूदिया और सामरिया में बिखर जाते हैं
4. फिलिप्पुस सामरिया में प्रचार करता है और बहुत से लोग विश्वास लाते हैं
5. सामरिया में प्रेरितों (पतरस और यूहन्ना) के हाथ रखने से पवित्र आत्मा मिलता है
6. फिलिप्पुस खोजे को बपतिस्मा देता है

अध्याय 9

1. शाऊल (पौलुस) का मन परिवर्तन
2. शाऊल दमिश्क में प्रचार करता है, बचकर यरूशलेम में जाता है, तरसुस में भेजा जाता है
3. कलीसिया शान्ति पाती है और बढ़ती जाती है
4. दोरकास (तबीता) को जिन्दा किया जाता है

अध्याय 10

1. कुरनेलियुस (अन्यजातियों में से सबसे पहला) का मन परिवर्तन पतरस के द्वारा होता है
2. अन्यजातियों (कुरनेलियुस के घराने के लोगों) को पवित्र आत्मा दिया जाता है

अध्याय 11

1. पतरस यरूशलेम की कलीसिया को कुरनेलियुस के मन परिवर्तन के बारे में बताता है
2. अन्ताकिया में बहुत से लोग परिवर्तित होते हैं; बरनबास और पौलुस अन्ताकिया में चेलों को वचन सिखाते हैं
3. अगबुस नबी भविष्यवाणी करता है कि संसार में एक भयंकर अकाल पड़ने वाला है; विश्वासियों ने अन्ताकिया से यरूशलेम की कलीसिया के लिए सहायता भेजी

अध्याय 12

1. हेरोदेस यूहन्ना के भाई याकूब को मार डालता है
2. हेरोदेस पतरस को भी गिरफ्तार करता है, परन्तु पतरस को एक स्वर्गदूत आजाद करवा देता है और वह वहां चला जाता है जहां मसीही लोग इकट्ठे हुए होते हैं
3. हेरोदेस को लोग देवता कहते हैं और परमेश्वर को महिमा न देने के कारण वह मर जाता है

अध्याय 13

1. बरनबास और पौलुस को अन्ताकिया की कलीसिया सुसमाचार के प्रचार के लिए भेजती है
2. बरनबास और पौलुस कुप्रुस में और पिसिदिया के अन्ताकिया में सुसमाचार का प्रचार करते हैं; अन्यजातियों के लोगों में से बहुत से विश्वास लाते हैं; लेकिन यहूदी लोग पौलुस और बरनबास को सताते हैं

अध्याय 14

1. पौलुस और बरनबास इकुनियुस, लुस्त्रा और दिरबे में सुसमाचार का प्रचार करते हैं बहुत से लोग विश्वास लाते हैं
2. पौलुस-बरनबास को लुस्त्रा में लोग देवता मानने लगे थे परन्तु; बाद में पौलुस पर पत्थराव किया गया
3. लौटते समय पौलुस और बरनबास इन कलीसियाओं में फिर से जाते हैं और वहां पर प्राचीन ठहराते हैं
4. वे सीरिया के अन्ताकिया में जाते हैं और अपने मिशन की बात कलीसिया को बताते हैं

Acts History of P. C. (Hindi)

अध्याय 15

1. यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस और अन्यजातियों की जिम्मेदारी
2. पौलुस और बरनबास अलग होकर नये मिशनरी मार्ग पर चले जाते हैं

अध्याय 16

1. पौलुस और सीलास किलिकिया, दिरबे और लुस्त्रा में जाकर मसीहियों को उत्साहित करते हैं; लुस्त्रा में तीमुथियुस भी उनके साथ मिल जाता है
2. मकिदुनिया और फिलिप्पी में वे सुसमाचार का प्रचार करते हैं; फिलिप्पी में (और लोगों के साथ) लुदिया और दारोगा बपतिस्मा लेते हैं

अध्याय 17

1. पौलुस और उसके साथी थिस्सलुनीके में सुसमाचार का प्रचार करते हैं; वहां बहुत से लोग विश्वास लाते हैं, लेकिन शहर में गड़बड़ हो जाती है
2. वे बिरीया में सुसमाचार ले जाते हैं, वहां बहुत से लोग विश्वास लाते हैं; परन्तु थिस्सलुनीके से आए कुछ लोगों के कारण वहां गड़बड़ हो जाती है
3. पौलुस अथेने में जाता है वहां प्रचार करता है, कुछ लोग विश्वास लाते हैं

अध्याय 18

1. पौलुस कुरिन्थुस में जाता है; और प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ काम शुरु करता है
2. पौलुस पहले यहूदियों में प्रचार करता है, परन्तु जब वे विरोध करते हैं तो वह अन्यजातियों में प्रचार करना शुरू करता है
3. पौलुस अन्ताकिया में लौटता है
4. पौलुस गलतिया और फ्रुगिया से होता हुआ तीसरी मिशनरी यात्रा आरम्भ करता है
5. अप्पुलोस इफिसुस में प्रचार करता है; प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला उसे प्रभु का मार्ग और भी अच्छी तरह बताते हैं

अध्याय 19

1. पौलुस इफिसुस में आता है और उन लोगों को भी बपतिस्मा देता है जो केवल यूहन्ना का बपतिस्मा ही जानते थे; जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे तो उन्हें भी उसी तरह पवित्र आत्मा मिला जैसे पिन्तेकुस्त के दिन मिला था
2. पौलुस इफिसुस में दो वर्ष तक सुसमाचार का प्रचार करता और वचन सुनाता रहा
3. बहुत से लोगों ने जो जादू टोने करते थे, अपनी पोथियां जला दीं
4. देमेत्रियुस ने नगर में बड़ी गड़बड़ी करवा दी

अध्याय 20

1. पौलुस भाइयों को उत्साहित करने के लिए एक बार फिर मकिदुनिया और यूनान में जाता है
2. पौलुस शुष्क मार्ग से त्रोआस होकर जाता है जहां वह यूस्तुस को जिलाता है जो पौलुस का संदेश सुनते हुए नींद के झोले के कारण खिड़की से गिर गया था
3. पौलुस मिलेतुस में प्राचीनों को सम्बोधित करता है

अध्याय 21

1. कैसरिया और सूर में पौलुस को चेतावनी दी जाती है कि वह यरूशलेम न जाए, परन्तु पौलुस कहता है कि वह तो मसीह के लिए मरने को भी तैयार है

2. यरूशलेम में पौलुस याकूब व दूसरे प्राचीनों के पास जाता है। वे उसे सुझाव देते हैं कि वह ऐसा व्यवहार करें जिससे लगे कि वह भी व्यवस्था का पालन करता है
3. मन्नत पूरी करने के लिए पौलुस अपने साथ चार लोगों को ले लेता है परन्तु कुछ यहूदी लोग नगर के लोगों को उसके विरुद्ध भड़का देते हैं, जिससे पौलुस को गिरफ्तार कर लिया जाता है

अध्याय 22

1. पौलुस अपने मन परिवर्तन और अन्यजातियों केा अपने मिशन के बारे यरूशलेम के लोगों के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करता है
2. पौलुस रोमी सिपाहियों को अपने रोमी नागरिक होने के बारे में बताता है

अध्याय 23

1. पौलुस महासभा के सामने; फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा
2. कुछ यहूदी पौलुस को मार डालने की योजना बनाते हैं
3. जब रोमियों को पौलुस की हत्या के षड्यन्त्र का पता चलता है, तो वे उसे पहरे में फेलिक्स के पास भेज देते हैं

अध्याय 24

1. राज्यपाल फेलिक्स के सामने पौलुस पर आरोप लगाता है और पौलुस अपना पक्ष प्रस्तुत करता है

अध्याय 25

1. पौलुस पर एक बार फिर आरोप लगता है और वह नये राज्यपाल फेस्तुस के सामने अपना पक्ष रखता है और मांग करता है कि उसका न्याय रोमी राजा के हाथों हो
2. राजा अग्रिप्पा और बिरनीके कैसरिया में आते हैं; फेस्तुस उन्हें पौलुस के बारे में बताता है

अध्याय 26

1. पौलुस अपना मुकदमा अग्रिप्पा को सुनाता है
2. पौलुस अग्रिप्पा को सुसमाचार बताने की कोशिश करता है

अध्याय 27

1. पौलुस को रोम भेजा जाता है
2. समुद्र में तूफ़ान आने से जहाज़ डूब जाता है

अध्याय 28

1. पौलुस मालटा के टापू पर; वह सांप के डंक से बचता है
2. पौलुस रोम में पहुंचता है; भाइयों द्वारा उसका स्वागत किया जाता है
3. पौलुस रोम के यहूदियों में प्रचार करता है
4. पौलुस को छूट दी जाती है कि वह किराए के मकान में जहां वह कैद था सुसमाचार का प्रचार कर सकता है

Acts: History of Primitive Church (Hindi)

प्रेरितों के काम: मूल कलीसिया का इतिहास

INSTITUTE OF BIBLICAL STUDIES
P.O. BOX - 44
CHANDIGARH - 160017